Dr. Premlata
Department
of History

P.G SEM IV

भारतीय सिनेमा का विकास 1947 के बाद बहुत ही रोचक और विविध रहा है।

1947-1960 : स्वर्ण युग :→ भारत की स्वतंत्रता के बाद, भारतीय सिनेमा ने एक नए युग की शुरुआत की। इस समय में कई महान फिल्में बनीं, जैसे कि "मुगले आजम" (1960), "दो बीघा जमीन" (1953), और "प्यासा" (1957) इन फिल्मों ने सामाजिक मुद्दों को उठाया और भारतीय समाज को प्रतिबिंबित किया।

1960-1980 नये चेहरे और नयी कहानियाँ :→ इस दौर में नये अभिनेता और अभिनेत्रियों ने अपनी पहचान बनाई, जैसे कि राजेश खन्ना, अमिताभ बच्चन, और जया बच्चन। फिल्मों में नये विषयों को उठाया गया, जैसे कि "आनंद (1971), "शोले" (1975), और "दीवार" (1975)

1980-2000 व्यावसायिक सिनेमा :→ इस समय में व्यावसायिक सिनेमा का उदय हुआ, जिसमें बड़े बजट की फिल्में बनाई गईं। फिल्मों में अधिक गाने और एक्शन सीन होने लगे, जैसे कि "कृष्णा" (1996) और "कोला" (1995) जैसी फिल्में।

2000 के बाद ग्लोबलाइजेशन और डिजिटल युग :→ भारतीय सिनेमा ने ग्लोबलाइजेशन के साथ कदम मिलाया और विश्व मंच में अपनी पहचान बनाई। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के उदय ने फिल्मों को नए दर्शकों तक पहुँचाया, जैसे कि नेटफ्लिक्स और अमेजन प्राइम। फिल्मों में नये विषयों को उठाया गया, जैसे कि "लगान" (2001), "दंगल" (2016), और "बाहुबली" (2015)

आज, भारतीय सिनेमा विश्व के सबसे बड़े फिल्म उद्योगों में से एक है जो विविध विषयों और शैलियों में फिल्में बनाता है।

Premlata
History